ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(12): 165-169
www.allresearchjournal.com
Received: 13-09-2022
Accepted: 15-10-2022

रुचि शर्मा
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्विद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
रुचि शर्मा
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्विद्यालय, दिल्ली, भारत

संत काव्य परंपरा और महामति प्राणनाथ

रुचि शर्मा

प्रस्तावना

संतो की परंपरा एवं महामति प्राणनाथ के विषय में जानने से पूर्व 'संत' शब्द की परिभाषा, अर्थ एवं उसकी उत्पत्ति को समझना अति आवश्यक है।' संत' शब्द संस्कृत 'सत्' के प्रथमा का बहुवचनांत रूप है,जो 'अस' धातु से निष्पन्न हुआ है। संत का मूल अर्थ हैं शांत अथवा सत्य (परम प्रभु) से संबद्ध हो अर्थात् सज्जन और धार्मिक व्यक्ति। महाभारत में संत शब्द का प्रयोग सदाचारी के अर्थ में हुआ हैं और संतो को आचार-लक्षण कहा गया हैं।*1

"आचार लक्षणोधर्म: सन्तश्चाचारलक्षण:।"

भागवत में यह शब्द पवित्रात्मा के अर्थ में प्रयुक्त हुआ हैं और बताया गया है कि संसार को पवित्र करने वाले तीर्थों को भी, संत पवित्र करने वाले होते हैं।*2

प्रायेणतीर्थाभिगमापदेशै: स्वयं हि तीर्थानि पुनन्ति सन्त:।

भतृहरि ने संत शब्द का प्रयोग परोपकार परायण व्यक्तियों के लिए किया है। उनके अनुसार संत स्वेच्छा से दूसरों का हित करने में लगे रहते हैं।

संत: स्वयं परहिते विहिताभियोगा:।

मन वचन और शरीर पुण्य के अमृत से लबालब होता है अपने उपकारों से वह तीनों लोकों को प्रसन्न करते रहते हैं और दूसरों के छोटे से छोटे गुण को पर्वत जैसा बड़ा मानकर हृदय में उल्लसित होते रहते हैं। भृतहरि का अनुभव है कि दुनिया में ऐसे लोग बहुत कम है।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा:
त्रिभुवनम्पकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण परमाणन्पर्वतीकृत्य नित्यं
निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्त॥

प्रयोगगत बहुलता के हिसाब से संस्कृत के साहित्य में संत एक सामान्य सा शब्द है। बहुत कम प्रयुक्त हुआ हैं। और मुख्यत: सज्जन का अर्थ देता है।
हिंदी में संत साहित्य की रचना का आरंभ,कबीर के समय अर्थात् 15वी शताब्दी से होना कहा जाता है और सर्वसाधारण की सम्मति से वह पहले संत ही थे जिन्होंने ऐसे साहित्य का सूत्रपात किया। कबीर के मत से संत वह हैं जिनका कोई दुश्मन नहीं हैं,जो निष्कामवृति वाले हैं, साईं से प्रीति करते हैं और विषयों से निर्लिप्त होकर रहते हैं।*3

निरबैरी निहकांमता साईं सेती नेह।
बिखया सौं न्यारा रहै संतनि कौ अंग एह||

सारी दुनिया दुःखी हैं –गृही, वैरागी, जोगी, जंगम, तपसी, ब्रह्मा-विष्णु-महेश,अवधूत, राजा, रंक सभी; क्योंकि इनमें से सभी को आशा और तृष्णा ने ग्रस्त कर रखा है। सुखी अकेला संत है जिसने मन को जीत लिया।*4

तन धरि सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया हो ।
घाटे बाटे सब जग दुखिया क्या गिरही वैरागी हो ।
जोगी दुखिया जंगम दुखिया तपसी कौं दुख दूनां हो ।
आसा त्रिसना सब को व्यापै कोई महल न सूनां हो ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर दुखिया जिन यहु राह चलाई हो ।
अवधू दुखिया भूपति दुखिया रंक दुखी विपरीती हो।
कहै कबीर सकल जग दुखिया संत सुखी मन जीती हो।।

कबीर आदि संतो की दृष्टि में जो करनी की कसौटी पर खरा उतरता है वही सच्चा संत है। मनुष्य हो या पशु, पेड़ हो या पौधा या निर्जीव पत्थर ही क्यों न हो, अगर उसकी करनी ऊंची है तो आदि संत कबीर से लेकर अंतिम संत तुलसी साहब या यूं कहें महामति प्राणनाथ तक सभी उसे बेहिचक संत मान लेते हैं। वास्तव में 'संत' शब्द अपने आप में व्यापक अर्थ लिए हुए है, जिसकी व्याख्या परवर्ती युग के आलोचकों ने भी की है। संत को परिभाषित करते हुए आचार्य परशुराम चतुर्वेदी कहते हैं ---

"संत शब्द इस विचार से उस व्यक्ति की ओर संकेत करता है, जिसने सतरूपी परमतत्व का अनुभव कर लिया हो और जो इस प्रकार अपने व्यक्तित्व से ऊपर उठकर उसके साथ तद्रूप हो गया हो। जो सत्य स्वरूप नित्यसिद्ध वस्तु का साक्षात्कार कर चुका हूँ अथवा अपरोक्ष की उपलब्धि के फलस्वरूप अखंड सत्य में प्रतिष्ठित हो गया हो वही संत है।"*5

वहीं वियोगी हरि 'सन्त' शब्द को समझाते हुए कहते हैं कि "जिन्होंने अपने जीवन में सत्य का चिंतन किया, सत्य को वाणी में उतारा, मन, कर्म, वचन से उनका आचरण किया जो रसास्वादन मिला, उसे सारे संसार में बिखेर देने के लिए जिनके मन में व्याकुलता है, जिन्हें लगता है कि उन्हें जो मधुर रस मिला, वह दूसरों को भी देते चले जाएं, वे संत है।"*6

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से एक बात स्पष्ट है कि संत वह हैं जिनमें परोपकारिता, दयाशीलता, कारूणिकता, मानवता कोई भी गुण हो उन्हें सहज उछल भाव से संत कहा जाता है।

संतो की परंपरा को जानने के लिए कभी कबीर को विभाजन का आधार बना कर 'कबीर के पूर्ववर्ती', 'कबीर के समकालीन' एवं 'कबीर के परवर्ती संत' इन तीन भागों में विभाजित करके अध्ययन किया जा सकता हैं।

कबीर के पूर्ववर्ती संत –

संतों की परंपरा में प्रथम संत जयदेव को माना जाता है। इनके गीतगोविंद में ही भक्ति आंदोलन की नींव पड़ चुकी थी। आदि ग्रंथ में जयदेव के नाम से दो पद संकलित हैं। कबीरदास ने भी अपनी बानियों मेँ जयदेव का नाम कई बार बड़े आदर से लिया है। संतों की इस श्रद्धा का कारण है जयदेव की निश्छल भक्ति।आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने कबीर के पूर्वकालीन संतों में जयदेव, नामदेव, सदना, लालदेव, वेणी और त्रिलोचन का उल्लेख किया है। स्पष्ट है कि संत परम्परा का प्रारंभ वे इन्हीं से मानते हैं।

जयदेव के पश्चात् वारकरी संत नामदेव आते हैं जिनका जन्म ईस्वी सन् 1270 और मृत्यु ईस्वी सन् 1350 में स्वीकार की जाती हैं। इनका हृदय बचपन से ही भक्ति रंग में रंगा था। इनके माता- पिता ने इन्हें कई बार व्यवसाय में लगाना चाहा, परंतु इनका मन सांसारिकता में न लगा। ये भक्ति में डूबे हुए अभंग गाते हुए और करताल बजाकर नाचते रहते थे। इनके कुछ पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित है। मराठी में इनकी एक रचना 'अभंग' नाम से प्राप्त होती है।

'सदना' नामक संत को नामदेव का समकालीन माना जाता है। डॉ ग्रियर्सन ने इनका समय ईसा की 17 वीं सदी माना है। कसाई जाति में उत्पन्न होकर मांसविक्रय का हीन पेशा करने वाले संत सदना का रैदास आदि संतों ने नामदेव, कबीर एवं त्रिलोचन के साथ बड़े आदर के साथ सहित उल्लेख किया है। इनका केवल एक पद आदि ग्रंथ में सम्मिलित हैं जिसमें इन्होंने ईश्वर से आत्म निवेदन किया है। जहाँ तक संत सदना, वेणी और कश्मीरी भक्तन लल्ला योगिनी या लाल देव का संबंध है, इनके विषय में इतनी क्षीण सूचनाएं उपलब्ध है कि उन पर से कोई स्थिर मत नहीं बनाया जा सकता। कश्मीरी भक्तिन लल्ला योगिनी के विषय में, प्रसिद्ध है कि वह शैव संप्रदाय का अनुसरण करने वाली भ्रमणशील भंगिन थी इनके सिद्धांत बहुत सरल और समन्वयात्मक थे तथा वह धार्मिक मतभेदों से बहुत दूर रहा करती थी।*7

रामानंद मध्य युग के प्रभावशाली समाज सुधारक एवं युग प्रवर्तक संत रहे हैं। जिन्होंने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर ज़ोर दिया। और एक बड़ा भारी सम्प्रदाय खड़ा किया। इनके जन्म स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं इन्होंने समाज में छोटे - बड़े, छूत – अछूत, हिंदू- मुस्लिम सभी के लिए भक्ति के दरवाजे खोल दिए। इन्होंने स्पष्ट कहा है---

"जात पात पूछे नहीं कोय, हरि को भजे सो हरि को होय"

इन्होंने अपना ईष्ट देव राम सीता को स्वीकार किया है इनकी प्रमुख रचनाएँ 'वैष्णवमताब्जभास्कर' एवं 'रामार्चन पद्धति' है।

कबीर के समकालीन संत

रामानंद के शिष्य एवं संतों के सिरमौर संत कबीर दास का जन्म संवत् 1455 की ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा सोमवार को माना जाता है और मृत्यु संवत् 1575 को। जनश्रुति तथा कबीर पंथियों के अनुसार कबीर का जन्म स्थान काशी सिद्ध होता है। इनकी जाति जुलाहा थी। कबीर मध्यकाल के सबसे प्रसिद्ध सशक्त और निर्भीक संत थे, जिन्होंने समाज को सबसे पहले वास्तविकता का आईना दिखाया। 'बीजक' नामक ग्रंथ में इनकी बानियां संकलित है। आदि संत कबीर की परंपरा में पड़ने वाले संतों में रैदास, धन्ना, पीपा, सेन और कमाल आदि प्रसिद्ध हैं।

संत रविदास अथवा रैदास के जन्मकाल से संबंधित प्रामाणिक साक्ष्य अनुपलब्ध है। फिर भी कुछ आलोचक इनका जन्म संवत् 1470 मानते हैं जबकि रविदासी सम्प्रदाय इनका जन्म माघ पूर्णिमा संवत 1433 को मानता है। रैदास जाति के चमार थे जूते गांठना और मरे पशुओं को ढोना इनका पुश्तैनी पेशा था। जिसके कारण से समाज में इनकी हँसी उड़ाई जाती थी, इस ओछे जन्म को स्वीकार करते हुए उन्होंने लिखा है---

जाति ओछा पाती ओछा, ओछा जनमु हमारा।
रामराज की सेवा किंनहीं, कहि रविदास चमारा।।

परंतु अपनी भक्ति के बल पर यह पूज्य हुए। संत रैदास गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी उच्चकोटि के विरक्त संत माने जाते हैं। ये सदाचार एवं शिष्टाचार में आस्था रखते हुए नामस्मरण को ही अधिक महत्व देते थे। संत रैदास के 40 पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित है तथा वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से 'रैदास वाणी' नाम से इनकी फुटकर रचनाओं का संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। इन्होंने अपना शरीर विक्रमी संवत 1584 को त्याग दिया था।

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव का जन्म संवत् 1526 लाहौर के तलवंडी नामक गांव में हुआ था। गुरु नानक देव प्रारंभ से ही शांत स्वभाव एवं आत्म चिंतन में लीन रहा करते थे। नानकदेव अकेले संत हैं जिन्होंने मुसलमान राजाओं नवाबों का स्पष्ट विरोध किया।*8 गुरु नानक देव ने भी मध्ययुगीन समाज को सही राह दिखाने और मानव कल्याण हेतु उपदेश दिए व लंबी-लंबी यात्राएं की। गुरु नानक देव ने समय समय पर अनेक पदों की रचना की, जिनका संकलन सिक्खों के पांचवें गुरु अर्जुन देव जी ने सन् 1604 ईस्वी में 'आदिग्रंथ' नाम से किया था। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएं 'रहिरास', 'आसा दी वार' एवं 'जपुजी' आदि हैं।

रैदास और नानक को छोड़कर इनमें से प्राय: सभी का बहुत कम साहित्य उपलब्ध होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सेन और पीपा के एक एक तथा धन्ना के चार पद संग्रहित है। जिसके आधार पर सेन, पीपा और धन्ना के सिद्धांतों का कोई व्यवस्थित स्वरूप सामने नहीं आता।

कबीर के परवर्ती संत

कबीर के परवर्ती संतों में मुख्य रूप से दादूदयाल, सुन्दरदास, रज्जब, धरनीदास, महामति प्राणनाथ, यारी साहब, दरिया साहब (मारवाड़ वाले), दरिया साहब (बिहार वाले), चरणदास, लालदास, दयाबाई, सहजोबाई, तुलसीसाहब आदि संतों का नाम प्रमुख हैं. इन सभी संतों के संक्षिप्त परिचय का अध्ययन करने के पश्चात् महामति प्राणनाथ पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

कबीर के परवर्ती संतों में सर्वप्रथम नाम दादूदयाल कर लिया जाता है। दादू का जन्म संवत् 1601 को तथा निधन संवत 1660 को माना जाता है। दादू ने स्वयं अपनी रचनाओं का संकलन नहीं किया, अपितु उनकी रचनाओं को संकलित करने का कार्य उनके शिष्यों जगन्नाथ दास और संतदास द्वारा 'हरड़े बानी' नाम से किया गया, बाद में रज्ज़ब ने 'अंगवधु' नाम से दादू के पदों एवं साखियों का संग्रह किया।

संत रज्ज़ब दादू के प्रमुख शिष्य थे। इनका जन्म संवत् 1624 में हुआ था रज्जब की दो प्रमुख कृतियां उपलब्ध है--- 'रज्जब बानी' और 'संबंगी'। इसके अतिरिक्त एक रचना 'अंगवधु' है, जिसमे अपने गुरु दादूदयाल के पदों तथा साखियों का संग्रह है।

संत सुंदरदास संत परंपरा के सबसे शिक्षित, शास्त्रज्ञ संत थे। इनका जन्म संवत् 1653 को जयपुर राज्य की पुरानी राजधानी धौंसा में हुआ था। दादू के प्रसिद्ध शिष्य रज्ज़ब इनके गुरु भाई थे। संत कवियों में सुन्दर दास एकमात्र कवि हैं जिन्हें पारंपरिक ढंग से शिक्षा मिली थी। इनकी रचनाओं का संकलन 'सुंदर ग्रंथावली' के नाम से किया गया है।

संत धरणीदास का जन्म बिहार के छपरा जिले के मांझी गांव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके जन्म व मृत्यु तिथि के विषय में कोई भी प्रामाणिक जानकारी नहीं है। इनकी प्रमुख रचनाएँ 'शब्द-प्रकाश', 'प्रेम-प्रकाश' एवं 'रत्नावली' है जो अभी तक अप्रकाशित हैं। इनकी चुनी हुई कुछ बानियों का संग्रह वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुई है।

अकबर के शासनकाल में बाबरी साहिब ने बाबरी-पंथ का प्रवर्तन किया। इस पंथ में आगे चलकर छ-सात बहुत प्रसिद्ध संत हुए जिनमें यारी साहब, बुल्ला साहब, जगजीवन साहब, गुलाल साहब, भीखा साहब और पल्टू साहब का नाम संतमत में सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। यारी साहब मुसलमान थे। इनका नाम पहले यार मोहम्मद था। यारी साहब की रचनाओं का छोटा-सा संग्रह 'रत्नावली' नाम से बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग द्वारा प्रकाशित किया गया है।

दरिया साहब (मारवाड़ वाले) का जन्म मारवाड़ के जैतारन गांव में एक मुसलमान परिवार में संवत् 1733 में हुआ था। दरिया साहब भी अपनी गहरी अनुभूति में सदा मग्न रहा करते थे। इन्होंने भी अन्य संतों की भांति विविध अंगों पर साखियां कहीं हैं, और प्रेम एवं विरह के पद भी लिखे हैं। इनकी बाणियों का संग्रह बेलवेडियर प्रेस ने 'दरिया साहब (मारवाड़ वाले) का बानी' नाम से प्रकाशित किया हैं।

दरिया साहब (बिहार वाले) का जन्म आरा जिले के धरकन्धा (धारखंड) नामक गांव में हुआ था। इनकी जन्मतिथि अनिश्चित हैं। दरिया साहब ने भी कबीर साहब की भांति जाति पाति का विरोध एवं बाह्य आडंबरों का खंडन किया है। इन्हें कबीर साहब का अवतार भी कहा जाता है।

संतचरण दास के विषय में जानकारी उनकी शिष्या सहजोबाई की रचना 'सहज प्रकाश' से मिलती है। चरणदास का जन्म संवत् 1760 में हुआ था। संत चरणदास की 15 रचनाओं का एक संग्रह वेंकेटेश्वर प्रेस, मुंबई से प्रकाशित हुआ है। संत चरणदास की मृत्यु संवत् 1839 के लगभग दिल्ली में हुई, जहाँ इनकी समाधि और मंदिर आज भी है।

सहजोबाई, चरणदासी संप्रदाय के प्रवर्तक चरणदास की शिष्या थीं। इनके जन्म की तिथि अभी तक निश्चित नहीं है। सम्वत 1800 के आसपास इन्होंने 'सहज प्रकाश' नामक ग्रंथ लिखा था।

दयाबाई भी संत चरण दास की प्रसिद्ध शिष्या रहीं है। दयाबाई का उल्लेख पीतांबरदत्त बड़थ्वाल ने संत चरणदास की चचेरी बहन के रूप में किया है।*9

इनका जन्म लगभग संवत् 1750 से संवत् 1830 विक्रमी माना जाता है। इनकी रचनाओं का संग्रह 'दयाबाई की बानी' नाम से बेलवेडियर प्रेस से प्रकाशित है, जिसमें 'दयाबोध' और 'विनयमालिका' नामक दो ग्रंथों का संकलन किया गया हैं।

अंतिम संत तुलसी साहब की जन्म एवं निर्माण तिथि में पर्याप्त मतभेद हैं इनके द्वारा रचित तीन ग्रंथ उपलब्ध है--- 'घट रामायण', 'शब्दावली' और ' रत्न सागर'।

आत्मजागरण मंत्र के प्रदाता, सर्वधर्म समन्वय के उद्गाता महामति प्राणनाथ का स्थान संत काव्य परंपरा में विशिष्ट और सर्वोच्च है। महामति प्राणनाथ एक महान युग प्रवर्तक थे। महामति प्राणनाथ का जन्म जामनगर (गुजरात) के लोहाणा क्षत्रिय परिवार में सितंबर सन् 1618 ईस्वी तदनुसार विक्रम संवत् 1675 में हुआ। इनके पिता केशव ठाकुर जामनगर के दीवान थे। उच्च पद पर रहते हुए भी उनका जीवन सादगीपूर्ण था। केशव ठाकुर की पत्नी धनबाई भी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। ठाकुर दंपत्ति के मंझले पुत्र का नाम मेहराज ठाकुर था यही तेजस्वी पुत्र आगे चलकर 'प्राणनाथ' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

असाधारण मनीषा के धनी महामति प्राणनाथ का व्यक्तित्व बहुआयामी था। मध्ययुगीन विश्व के इतिहास पटल पर उन जैसा विश्व-मंगल के प्रति पूर्ण समर्पित व्यक्तित्व शायद ही कोई और दृष्टिगत हो। तत्कालीन समाज जाति पाति, भेदभाव, छुआछूत, अंधविश्वास, पाखंड, चमत्कार, नारी-दमन आदि के लौह जाल में बुरी तरह जकड़ा हुआ था। त्रस्त समाज को मुक्ति दिलाने के लिए महामति ने इन सभी कुरीतियों का प्रबल विरोध किया। 'सुख शीतल करूँ संसार' के लिए करुणामूर्ति महामति ने सक्रिय कदम उठाया 'जागनी अभियान' का, नवजागरण का, समूह जागरण का। उनका मानना है---

पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊँ बाँधे जुथ।
ये जिमि झूठी दुख की, सो कर देऊँ सत सुख॥*10

भारत में उन दिनों मुगल शासक औरंगजेब का शासन था। धर्म के नाम पर उसने आतंक और अत्याचार फैला रखा था, उसके अत्याचार से इस्लामेतर जनता त्राहि- त्राहि कर रही थी।

राजनीतिक अराजकता के साथ-साथ सामाजिक एवं धार्मिक अराजकता अपने चरम पर थी। मुगलों द्वारा हिंदुओं को जबरदस्ती मुस्लिम धर्म में परिवर्तित करना, देवालय ध्वस्त करना, देव प्रतिमाएं तोड़ना, तीज-त्योहार पर रोक लगाना तथा भारी भरकम कर लगाकर सामान्य जनता को प्रताड़ित किया जाता था। हिंदू जनता भी विभिन्न जाति-उपजातियों में बंटी हुई थी, जिससे समाज में आपसी भेदभाव का वातावरण फैला हुआ था। महामति धर्म परिवर्तन के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने हिंदू और इस्लाम दो विपरीत ध्रुवीय धर्मावलंबियों को उनकी धर्मांधता और कूपमंडुकता से बाहर लाकर शाश्वत सत्य से अवगत कराया। उन्होंने उद्घोषित किया---

सीधे सबद रसूल के, पर ये समझे कछु और।
जो लों सबद न चीनहीं, तो लों न पाइये ठौर ॥*11

सनंध, प्र. 25/46

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक।
दोऊ मुट्ठी एक ठौर की, इक राख दूजी खाक ॥*12

सनंध, प्र. 40/42

इस प्रकार महामति ने दोनों धर्मों के सार तत्व को एक नई दृष्टि एवं अभिनव चिंतन द्वारा अपनी प्रखर वाणी से विवेचित किया। अपनी वाणी, ज्ञान तथा रचनाओं के माध्यम से सभी धर्मों, जातियों और मानव समूहों के बीच एकता तथा समरसता का शंखनाद किया।
महामति प्राणनाथ ने समाज की तत्कालीन स्थिति को ध्यान में रखते हुए समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समन्वय स्थापित किया, जिससे भटका हुआ समाज एक हो जाएं और एक सशक्त भारत राष्ट्र का निर्माण हो सके। महामति जी धार्मिक समन्वय को उद्घोषित करते हुए कहते हैं---*13

नाम सारों जुदें धरे, लई सबों जुदी ररस ।
सब में उमत और दुनिया, सोई खुदा सोई ब्रह्म॥

खुलासा, प्र. 12/38

फरिश्तों और देवी-देवताओं में समानता प्रकट करने के लिए महामति ने 'वेद और कतेब' ग्रंथों का गहन अध्ययन किया था। इस्लाम के शिया ग्रंथों के चार आसमान, नासूत, मलकूत, जबरूत और लाहूत तथा हिंदू ग्रंथों के मृत्युलोक, बैकुंठ, अक्षरधाम तथा परमधाम है। महामति का कहना है कि अलग अलग नाम देने के कारण ही उलझनें पैदा हो गई। इसलिए महामति ने सप्रमाण इसे सुलझाया ताकि सब समझ सकें---*14

ताथे हुई बड़ी उलझन, सो सुरझाऊँ दोय ।
नाम निसान जाहेर करूँ, ज्यों समझे सब कोय॥

खुलासा, प्र. 12/43

महामति ने जहाँ वेद, कतेब और हेमेटिक-सेमेटिक धर्म चिंतनप्रणालियों में व्याप्त अनेक गाथाओं के समानांतर पक्ष को स्पष्ट किया, वहीं मिथकों, दृष्टान्तों आदि के अभिप्रेत अर्थ एवं आशय को भी उजागर करते हैं। यही विश्व मानवतावाद की आधारशिला है एवं यही आस्थाओं की सूत्रबद्धता भी हैं।
महामति प्राणनाथ की समन्वय भावना उनके द्वारा प्रणीत ग्रंथों की भाषा में भी दिखाई देती है, क्योंकि उनकी वाणी गुजराती, सिंधी, जाटी, खड़ीबोली, संस्कृत तथा अरबी फारसी मिश्रित आदि कई भाषाओं में है, परन्तु लिपि देवनागरी ही है। प्राणनाथ सभी बोलियाँ और भाषाओं का पूर्णतः सम्मान करते थे, परन्तु भारतीय जनमानस की सुगमता एवं सरलता के लिए हिंदी, हिंदवी या हिंदुस्तानी भाषा को महत्व देते थे---*15

बिना हिसाबे बोलियां, मिने सकल जहान।
सबको सुगम जान के, कहूंगी हिंदुस्तान।।

सनंध, 1 / 15

महामति प्राणनाथ की भक्ति में निर्गुण और सगुण भक्ति के समन्वित रूप के दर्शन होते हैं, जहाँ श्रीराज जी एवं श्री श्यामाजी को परब्रह्म का स्वरूप माना जाता है, तथा 11 वर्ष 52 दिन के कृष्ण की पूजा की जाती है। उसके पश्चात वे क्रमशः गोलोकी कृष्ण और विष्णु भगवान की शक्तियों से समन्वित होकर लीला करते हैं। मुख्यतः प्राणनाथ की भक्ति सांसारिक मोह, अज्ञान की भावना का त्याग कर परमात्मा को पति भाव से भजने पर बल देते हैं। वह कहते हैं---

सखी भाव भजिए भरतार।*16

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि संत परंपरा का प्रारंभ आदिसंत कबीर से होता है, इसी संत परंपरा के अन्य विशिष्ट संतों में कमाल, धर्मदास, सिंगाजी, रज्जब, मलूकदास, सुंदरदास, दादूदयाल, महामति प्राणनाथ, धरनीदास, यारीसाहब, दरियासाहब, जगजीवन साहब, दूलन साहब, चरणदास, सहजोबाई, दयाबाई, गुलाल साहब, गरीबदास, पलटू साहब, भीखा साहब और तुलसी साहब आदि प्रसिद्ध संत हुए हैं। स्पष्ट है कि कबीर के परवर्ती एवं उत्तर मध्यकालीन अर्थात् रीतिकालीन समय में अवतरित हुए महामति प्राणनाथ जी का स्थान संत परंपरा में विशेष महत्व रखता है। उनके द्वारा वेद-कतेब ग्रंथों का सूक्ष्म अध्ययन करना तथा उनके माध्यम से दोनों धर्मों के बीच समन्वय भाव स्थापित करना एक अतुलनीय व सराहनीय कार्य है। प्राणनाथ की भाषा भले ही पंचमेल रही हो, परन्तु उनका झुकाव हिंदवी और हिन्दुस्तानी की ओर ही अधिक रहा है। इसी भाषा में उन्होंने अपनी वाणी द्वारा विषम परिस्थितियों में भी समाज का उद्धार किया। इतना ही नहीं वर्तमान में भी महामति प्राणनाथ की वाणी आत्म-उद्धारक एवं समाज-सुधारक तथा धर्म के सत्य स्वरूप की प्रसारिका है। तथा समाज के पथ- प्रदर्शन एवं ऊर्जा के स्रोत के रूप में पूर्णतः प्रासंगिक है।

आधार-ग्रंथ

1. महामति प्राणनाथ वाणी, प्रकाशक – श्री प्राणनाथ मिशन

सहायक-ग्रंथ

1. उत्तरी भारत की संत परंपरा, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी,प्रथम संस्करण 2008
2. कबीर ग्रंथावली, संपादक डॉ. पारसनाथ तिवारी
3. कबीर, आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी,1955
4. महामति प्राणनाथ वाङ्.मय विमर्श, डॉ. रणजीत साहा,यश पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2006
5. महामति प्राणनाथ, डॉ. रणजीत साहा, साहित्य अकादमी, 2014
6. श्री प्राणनाथ वाणी प्रवेशिका, विमला मेहता, श्री प्राणनाथ मिशन, 2010

संदर्भ-ग्रंथ

1. महाभारत
2. भागवत पुराण-1,19,8

3. कबीर ग्रंथावली, संपादक डॉ पारसनाथ तिवारी, पृष्ठ 156, सा. 24
4. वही, पृष्ठ 52-53, पद-90
5. उत्तरी भारत की संत परंपरा, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, तृतीय संस्करण, पृष्ठ 5
6. भूमि क्रांति (साप्ताहिक) दिसंबर 1961 में संकलित लेख 'संतो की परम्परा से' उद्धृत, पृष्ठ 9
7. उत्तरी भारत की संत परंपरा, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पृष्ठ 102
8. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, पृष्ठ 93
9. हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय, डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, पृष्ठ 145
10. कलश, 23/24
11. सनंध, प्रकरण 25/46
12. वही, प्रकरण 40/42
13. खुलासा, प्रकरण 12/38
14. वही, प्रकरण 12/43
15. सनंध, 1/5
16. कलश, 24/9